Research Scholar : Sonam Khan

Supervisor : Dr. Mukesh Kumar Mirotha

Department : Hindi

Tittle : Udarikaran Ke Daur Ki Hindi Kahaniyon Me Chitrit Istree CHhavi Ka Adhyan

संक्षिप्त शोध सार

उदारीकरण का सम्बन्ध भारतीय अर्थव्यवस्था में उन नीतियों से है जिनके माध्यम से विश्व के अन्य देशों के साथ वस्तुओं और विचारों के आवागमन को सुगम बनाने हेतु विभिन्न प्रकार के समझौते किए जाते हैं | उदारीकरण का प्रभाव विश्व की अर्थव्यवस्था से लेकर मानव समाज के विभिन्न क्रियाकलापों पर भी पड़ता है | उदारीकरण के बाद जहाँ समाज एक ओर आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ रहा है वहीं दूसरी और इसके चलते संसाधनों का तेजी से दोहन और मानवीय मूल्यों का विघटन हो रहा है | इस सबके बावजूद एक सच्चाई यह भी है कि इसके चलते स्त्री की स्थिति में काफी सकारात्मक बदलाव आए हैं जिहें उदारीकरण के दौर की महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्पष्ट किया है |

उदारीकरण के बाद स्त्री अपनी अस्मिता को लेकर सजग दिखाई पड़ती है | आर्थिक आत्मनिर्भरता के चलते उसमें आत्मविश्वास का संचार हुआ है | आर्थिक स्वतंत्रता ने स्त्री को स्वतंत्र होने का अवसर दिया है | इस सबके बावजूद भी स्त्री के सामने कुछ चुनौतियाँ बरक़रार हैं जिन्हें इस दौर की कहानियाँ उजागर करती हुई नजर आती हैं | स्त्री को बाजार ने खूब लुभाया है | इस बाजार में 'स्त्री की देह' केंद्र में होती है | सभी विज्ञापन, मीडिया स्त्री सौन्दर्य के पैमाने व मानकों में स्त्री को 'फिट' करने में लग जाते हैं | ऐसे में स्त्रियाँ बार्बी डॉल बनने की ओर आकर्षित होने लगती हैं जिसके चलते स्त्रियों का समय व श्रम सुन्दर दिखने की चाहत पर खर्च होने लगते हैं | यह स्त्री की सोच के दायरे को सीमित करने की सोची समझी रणनीति है | इस दौर में ऐसी अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं जहाँ स्त्रियाँ नौकरी करने और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के बावजूद भी स्वतंत्र नहीं है | साड़ी के रंग से लेकर घर की सजावट तक हर जगह पुरुष(पति) ही फैसला करता है | आर्थिक आत्मनिर्भरता की प्रतीक 'तनख्वाह' पर भी पुरुष अपना अधिकार समझता है | वहीं दूसरी तरफ ऐसी कहानियाँ भी हैं जिनमें स्त्रियाँ मुख्यधारा में आने का पुरजोर प्रयास कर रही हैं और अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं |

नब्बे के दौर की स्त्री कहानीकारों ने अपनी कथा-कहानियों में समाज में व्याप्त बेरोजगारी, प्रतिरोध, भ्रष्टाचार, विकल्प और अवसर जैसे महत्त्पूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित किया है | स्त्रियों ने पुरुषसत्ता के सामंती ढाँचे में कैद रहने के बजाय उदारवादी नीतियों का उपयोग करते हुए समतावादी समाज की स्थापना की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है | शिक्षा, रोजगार और स्वाबलंबन ने स्त्री की छवि को बदला है | आज की स्त्री समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के कंधे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं | बदलते वक़्त के साथ समाज में स्त्रियों की क्षमता और कार्यशैली की स्वीकार्यता भी बढती जा रही है | उदारीकरण के बाद प्राप्त अवसरों का लाभ उठाते हुए स्त्री ने समाज में अपनी आवाज बुलंद की है और हर कदम पर यह साबित किया है कि वे किसी भी मामले में पुरुषों से कमतर नहीं हैं | हिंदी की स्त्री कहानीकारों ने इस दौर की स्त्री के जीवन संघर्षों और पुरुषसत्ता से बाहर निकलने के प्रयत्नों को भरपूर जगह देते हुए यह साबित किया है कि स्त्री अब पुरुषों के हाथ की कठपुतली नहीं है | वह शिक्षित होकर समाज के साथ कदमताल करने को तैयार खड़ी है |